अ ली क

अंक: पाँच
श्रावण ।। अगस्त।। 2024

तापमान लगभग चालीस को पार कर गया है
और किसान खेतों में गेहूँ की फसल काट रहे हैं

ये वही किसान हैं जो तीन डिग्री तापमान पर
इसी फसल में आधी रात में सिंचाई कर रहे थे

गेहूँ ऐसे ही आपकी थाली तक नहीं आ जाता !

दीपक पाटीदार

Edited and published by Neel Kamal from 244, Bansdroni Place,
Kolkata- 700070 and printed at Jayasree Press, Kolkata- 700009.

लीक लीक गाड़ी चले लीकहिं चले कपूत

लीक छोड़ तीनों चलें शायर सिंह सपूत

अ ली क

अंक: पाँच

श्रावण ।। अगस्त ।। 2024

सम्पादक

नील कमल

आवरण चित्र: *सरस्वती नदी, देवानन्दपुर, हुगली, पश्चिम बंगाल*

अलीक पत्रिका के लिए नील कमल द्वारा 244, बाँसद्रोणी प्लेस, कोलकाता- 700070 से प्रकाशित

दूरभाष: 9433123379/ 8013046813

ई-मेल: nneelkkamal@gmail.com

इस अंक में

कविता

विशाखा मुलमुले

केशव शरण

विशाखा मुलमुले

वाराणसी

1.

नींद में डूबा है बनारस

अपने ही रस में आप्यायित

तपते मौसम से प्रभावित दमित है गंगा

मनुष्यों के व्यवहार से प्रदूषित है गंगा

वरुणा और असि के मध्य बसे शहर में

अब तक कितनी शेष है काशी !

नामांतरण हुआ है उसका

बनारस से पुनः वाराणसी में

पर 'न हन्यते'' के भावार्थ में

आत्मा अभी भी दिखती बनारसी।

2.

ताँतपुर से तुलसीघाट तक

धनुषाकार में बहती है गंगा

शिव की जटाओं से धरा पर उतरी

मानो वह हो शिव का धनुष ही

बनारस में निश्चित ही किसी आस में रखा है धनुष

दशकों से राजाओं का आवाहन करता

अब जब रामराज्य पुनः लौटा है

तब आकुल हो प्रतीक्षारत है गंगा

कि उठाये कोई तो बीड़ा

बाँधे प्रत्यंचा

उसके निर्मलीकरण हेतु

कि,

घाट-घाट में घटती जा रही गंगा।

3.

'निंदक नियरे राखिए' दोहे को

सम्भवतः रचा होगा कबीर ने गंगा के घाट पर

क्योंकि

दशाश्वमेध घाट पर यही बात

बार-बार स्मरण कराती है गंगा

गंगा के तट पर कई सौ मनुष्य आँख मूंद

लगाते डुबकियाँ, धोते पाप

जोड़ते जीवन में और जीवन

वहीं आँख खोलते ही

घाट के बाँक पर होता मृत्यु से साक्षात्कार

मृत्यु,

जिसके प्रश्नपत्र से जीवनभर करते लोग किनारा

न देखते उस ओर

करते उसकी आलोचना